International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

The Unknown Hero of Baghpat District in the Revolution of 1857

1857 की क्रांति में जनपद बागपत के गुमनाम नायक

Mohit[1], Dr Renu Jain[2]

[1]Research Scholar History, IIMT University, Meerut, U.P.
[2]Associate Professor History, IIMT University, Meerut, U.P.

शोध सार

जब हम भारतवर्ष के इतिहास में घटित सबसे महत्वपूर्ण घटना 1857 की क्रांति की बात करते हैं तो पश्चिमी उत्तर प्रदेश के वर्तमान जनपद बागपत का नाम इस क्रांति में योगदान के लिए सर्वाधिक आग्रणी जनपदों में आता है। बागपत की पावन वीर प्रसुता माटी की सुगन्ध में खेले कूदे और पले–बढे क्रान्तिवीरों के नाम और इस क्रान्ति में दिये उनके अतुलनिय योगदान के बिना भारतवर्ष का इतिहास अधुरा ओर निष्प्राण जैसा ही होगा। बागपत के अधिकांश गांवों ने प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से इसमें भाग लिया था। इनमें से अधिकांश गांव के किसानों ने अपने–अपने स्थानीय नेता के नेतृत्व में एकत्र होकर इस क्रांति में बागपत में क्रांति के नेतृत्वकर्ता बाबा शाहमल का साथ दिया था। इस क्षेत्र के महान, निष्काम और बहुत से अनाम, अज्ञात, क्रांतिवीरों के बलिदान से अंग्रेजी शासन लगभग समाप्त हो गया था। अंग्रेज त्राहिमाम–त्राहिमाम करने लगे थे। 1857 की क्रांति के विषय में अनेक इतिहासकारों ने विस्तार से विवरण दिये है परंतु जनपद बागपत के 1857 की क्रांति में दिए गए योगदान और क्रांतिवीरों के विषय में व्यवस्थित रूप से किसी भी लेखक द्वारा लिखने का सार्थक प्रयास नहीं किया गया। फिर भी अपने क्रांतिवीर पूर्वजों के विषय में हमें ज्ञान नहीं है ऐसा भी तो नहीं है। ठाकुर गंगा बिशन सिंह, बाबा मेहर चन्द, चौधरी जयराम और बाबा अचल सिंह गुर्जर जैसे अनेक वीरो ने अंग्रेजों से भारत वर्ष को आजाद कराने के लिए अपने परिवार और प्राणो तक को बलिदान कर दिया। आज भी जनपद बागपत के असंख्य क्रांतिवीर अल्पज्ञात है। यह बहुत ही खेद का विषय है। हमारा दायित्व है कि हम उन बलिदानी वीरो की गाथा को जन–जन तक पहुचांये और उनको यथोचित सम्मान दिलायें।

बीज शब्द– क्रांति, अल्पज्ञात, किसान, बलिदान

ठाकुर गंगा बिशन सिंह

''सर पर बांधे है कफन, हाथों में मौत का परवाना है।
जिन्दा रहना लक्ष्य नहीं, मां को आजाद करवाना है।''[1]

1857 की क्रांति में सम्मिलित आजादी के दीवानों का यही सोचना और यही कहना रहा होगा। उन्हें जीने की चाह नही थी। उनका एकमात्र और अंतिम लक्ष्य भारतवर्ष से अंग्रेजों को भगाकर हिंद को आजाद कराना था। उसके लिए चाहे उन्हें कोई भी कुर्बानी क्यों नहीं देनी पड़े। जनपद बागपत के ऐसे ही महान क्रांतिकारी, देशभक्त, भारत माता की सच्चे सपूत, रवा राजपूत जाति के कोहिनूर, ठाकुर गंगा बिशन सिंह जी थे। जिन्हें अंग्रेज पावर (बल) के नाम से सम्बोधित करते थे। ठाकुर गंगा बिशन सिंह का जन्म जनपद बागपत के टयोढी नाम के गांव में हुआ था।[2] अनेक क्रांतिकारियों की भांति ठाकुर गंगा बिशन सिंह के पूर्वजों का इतिहास भी अज्ञात ही है। फिर भी यह कहना भी कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि उनका जन्म एक साधारण किसान परिवार में हुआ था। गंगा बिशन सिंह अपने अपने पिता की इकलौती संतान भी नहीं थे। उनके ओर भी भाई–बहन थे। जैसा कि बच्चों पर सर्वाधिक प्रभाव अपने माता–पिता का होता है गंगा बिशन सिंह भी इससे अछूते नहीं थे। इन पर भी आपने पिता की देशभक्ति का प्रभाव निश्चित रूप से हुआ था। इनमें निर्भीकता, सहास, देशभक्ति का जज्बा, कूट–कूट कर भरा था। जो 1857 की क्रांति में परिलक्षित भी हुआ। 1857 की क्रांति के समय ठाकुर गंगा बिशन

[1] शर्मा महेश, अमर शहीद भगत सिंह, प्रकाशक प्रभात पेपरबैक्स, नई दिल्ली, 2015, पृ0 8।
[2] डॉ0 शर्मा कृष्ण कान्त, अट्ठारह सौ सत्तावन की क्रांति में बागपत के कृषकों की भूमिका, शहजाद राय शोध संस्थान, बडौत, पृ0 141।

सिंह एक पढा–लिखा नौजवान था। अर्थात 1857 में इनकी आयु 25 से 30 वर्ष के लगभग रही होगी। ठाकुर गंगा बिशन सिंह अविवाहित थे। ठाकुर साहब का कहना था कि मेरी शादी तो आजादी से होगी वरना नहीं होगी। मेरे वंश को मेरे भाई आगे बढ़ा लेंगे।[3]

ठाकुर साहब बचपन से ही अन्याय और अत्याचार के विरोधी होने के साथ–साथ देशभक्त भी थे। किसानों, मजदूरों और आम जनता पर अंग्रेजों द्वारा किए जा रहे अत्याचार उनके लिए असहनीय थे। वह इस बात पर हमेशा चिंतन और मनन करते थे कि अंग्रेजो के शोषण और अत्याचारों से भारतीय जनता को किस प्रकार बचाया जा सकता है। इसके लिए वह अपने आसपास अपने हमउम्र युवाओं से भी चर्चा करते थे। जिसका परिणाम यह हुआ कि उन्होंने क्रांति आरंभ होने से पूर्व ही एक देशभक्त नौजवानों का अपना दल तैयार कर लिया था। आखिरकार वह दिन भी जल्द ही आ गया जब ठाकुर साहब को भारत माता और किसानो के लिए कुछ कर गुजरने का अवसर प्राप्त हुआ। 10 मई 1857 को जब मेरठ से क्रांति का आरंभ हुआ तो जनपद बागपत में भी इसका जल्द ही पता लग गया था। बागपत में क्रांति के सर्वमान्य नेता शहामल ने समस्त बागपत व बड़ौत के गांव में सभी नौजवानों से इस क्रांति में भाग लेने का आह्वान किया था। उनके इस आह्वान पर ट्योढी निवासी ठाकुर गंगा बिशन सिंह अंग्रेजों का नाम–ओ–निशान मिटाने और भारत भूमि को अंग्रेजों से मुक्त करने के लिए आजादी के युद्ध में उत्तर पड़े थे।[4] ठाकुर गंगा बिशन सिंह ने देश को आजाद कराने हेतु नौजवान रवा राजपूतो का एक संगठन पहले ही तैयार कर लिया था तथा वह अपने दस्ते का नेतृत्व भी करते थे।[5] ठाकुर गंगा बिशन सिंह बहुत ही लड़ाका वीर थे तथा गुरिल्ला युद्ध प्रणाली में माहिर थे।[6]

अंग्रेजी राज में तहसील, किसानों के शोषण का प्रतीक हुआ करती थी। यही कारण रहा कि सर्वप्रथम बाबा शहामल के नेतृत्व में 12 मई 1857 को बडौत स्थित तहसील पर आक्रमण कर क्रान्तिकारियों द्वारा उस पर अधिकार कर लिया गया। और बागपत की आम जनता को यह एहसास दिलाया कि अब बागपत से अंग्रेजी सत्ता समाप्त हो चुकी है। इसके पश्चात ट्योढी निवासी नौजवान ठाकुर गंगा बिशन सिंह को बडौत तहसील का तहसीलदार नियुक्त कर बागपत के सेनानियों ने अपने प्रशासन की घोषणा कर दी।[7]

ठाकुर गंगा बिशन सिंह बहुत ही निडर और साहसी नौजवान थे। वह इस क्रांति में बाबा शाहमल के परम सहयोग के रूप में उभर कर सामने आये। अंग्रेज अफसर उनके नाम से भी कांपते थे। ठाकुर साहब ने इस क्रांति में जिस अदम्य साहस का परिचय दिया उसने उन्हें क्रांतिकारियों में विशेष स्थान प्रदान किया। वह अपनी लड़ाका किसान टोली के साथ सर पर कफन बांधकर चलते थे। मौत से खेलना उससे आंख मिचौली करना तो मानो ठाकुर साहब का शौक बना चुका था। वह अपने क्रांतिवीर किसान साथियों के साथ अंग्रेजी सेना अथवा अधिकारियों पर ऐसे टूट पड़ते थे मानो जैसे साक्षात यमराज हो। उनकी इसी दिलेरी, बहादूरी, साहस और निडरता के कारण अंग्रेज उनके नाम से भी खौफ खाने लगे थे।[8] ठाकुर गंगा बिशन सिंह बागपत में 1857 की क्रान्ति के नेतृत्वकर्ता बाबा शाहमल के साथ हमेशा उनके दाहिने हाथ की भांति रहते थे।[9] इसके अतिरिक्त ठाकुर गंगा बिशन सिंह ने बाबा शाहमल के साथ मिलकर बड़ौत के तथाकथित तात्कालिक अंग्रेज तहसीलदार को भी मौत के घाट उतार दिया था।[10] ठाकुर गंगा बिशन सिंह और आज भी अंसख्य अनाम, अज्ञात क्रांतिवीर किसानों ने बागपत को अंग्रेजों से मुक्त करा लिया था। इन क्रांतिवीरों की शक्ति और संगठन का ही परिणाम था कि ब्रिटिश कलेक्टर को भी यह लिखना पड़ा कि 'ऐसा लगता है यहां (बागपत) से उनकी सत्ता समाप्त हो गई है।'[11]

बड़ौत तहसील का तहसीलदार बनने के पश्चात सर्वप्रथम ठाकुर साहब ने यह ऐलान कर दिया कि अब अंग्रेजी राज समाप्त हो गया है। अब किसी भी किसान भाई को किसी भी अंग्रेज अधिकारी अथवा कर्मचारी को लगान (कर) देने की जरूरत नहीं है। अंग्रेजी शासन की रीड तहसील ही मानी जाती थी। क्योंकि कृषकों से कर (मालगुजारी) तहसीलदार द्वारा ही वसूल की जाती थी[12] परन्तु भारत के भाग्य को कुछ ओर ही मंजूर था। दुर्भाग्य से एक दिन अंग्रेजों से मुठभेड़ के दौरान बडौत तहसील के नौजवान तहसीलदार ठाकुर गंगा बिशन सिंह को अंग्रेजों द्वारा पकड़ लिया गया। यह अंग्रेजों की एक बहुत बड़ी जीत थी। उनके द्वारा अंग्रेजों के विरुद्ध किए गए कार्यों को देखते हुए अंग्रेजों ने उन्हें फांसी की सजा सुनायी। सजा को सुनकर ठाकुर साहब लेस मात्र भी घबराएं नहीं। उनके चेहरे पर मुस्कुराहट, उनके चेहरे का तेज, अंग्रेज अधिकारियों को भी विचलित करने वाला था। फांसी के समय शेर की दहाड़ की भांति उनकी एक ही आवाज थी ''मात हवें हौंगे पर मातहत रहोंगें ना।''[13]

---

[3] साक्षात्कार, ठाकुर राजेश चौहान पुत्र श्री शिवनारायण पटवारी, आयु 64 वर्ष, गांव ट्योढी, 28 जुलाई 2024।

[4] पूर्वोक्त।

[5] डॉ0 शर्मा महेन्द्र नारायण और डॉ0 राकेश शर्मा, बागपत वातायन, प्रथम भाग, आस्था साहित्य संस्थान, अलवर राजस्थान, 2010, पृ0 99।

[6] हिन्दी दैनिक समाचार पत्र दैनिक जागरण, बागपत, 09 मई 2023।

[7] डॉ0 रावत राम सिंह, रवा राजपूतों का इतिहास, प्रथम खण्ड, विद्या उपकारिणी रवा राजपूत सभा (पंजीकृत) डब्ल्यू. जेड. 485, नरायणा, नई दिल्ली – 110028, 1991, पृ0 173।

[8] हिन्दी दैनिक समाचार पत्र दैनिक जागरण, बागपत, 10 मई 2011।

[9] डॉ0 शर्मा महेन्द्र नारायण और डॉ0 राकेश शर्मा, सन् सत्तावन का क्रान्तिवीर बाबा शाहमल जाट, पब्लिसर दि जनरल ऑफ दि मेरठ युनिवर्सिटी हिस्ट्री एलुमिनी, मेरठ, पृ0 76।

[10] हिन्दी दैनिक समाचार पत्र हिन्दूस्तान, बागपत, 10 मई 2011।

[11] डॉ0 शर्मा कृष्ण कान्त, अट्ठारह सौ सत्तावन की क्रांति में बागपत के कृषकों की भूमिका, पूर्वोक्त, पृ0 140।

[12] पूर्वोक्त, पृ0 130।

[13] डॉ0 रावत राम सिंह, रवा राजपूतों का इतिहास, पूर्वोक्त, पृ0 173।

अर्थात हम मात जरुर खा गए हैं पर मातहत रहकर जीना हमें मंजूर नहीं। ठाकुर साहब बहुत दिलेर और स्वाभिमानी व्यक्ति थे। अंग्रेजों ने उन्हें पकड़ने के पश्चात लालच देने की भी भरपूर कोशिश की। उनसे कहा गया कि अगर वह अंग्रेज सरकार से माफी मांग ले और अंग्रेजों का साथ दे तो उनकी तहसीलदारी बरकार रखी जाएगी और उनकी फांसी की सजा को भी माफ कर दिया जायेगा। इस पर उन्होंने अंग्रेजों की खिल्ली उड़ते हुए बड़ी ही बहादुरी से मना कर दिया। भारत माता के वीर सपूत, सच्चे देशभक्त ठाकुर गंगा बिशन सिंह को तत्कालिक बडौत तहसील में फांसी दे दी गयी।[14]

भारत का एक ओर सपूत आजादी की बलिवेदी पर बलिदान हो गया। भारतवर्ष का दुर्भाग्य, आधुनिक हथियारों की कमी और कुछ अपने ही गद्दारों के कारण भारतवर्ष का प्रथम स्वाधीनता संग्राम असफल रहा। इसकी असफलता के पश्चात अंग्रेजों ने उन सभी गांव में बहुत अत्याचार किये जिन्होंने क्रांति में सहयोग दिया था। रवा राजपूतो के गांवों में जाकर अंग्रेज अधिकारियों ने पुरुषों को निकाल निकाल कर उनका सामूहिक कत्ल किया। किसानो की फसले उजाड़ दी गई, मकान फूंक दिए गए, सभी की जमीन जायदाद छीन ली गयी और उन्हें घर से बेघर कर दिया गया। फलस्वरुप बचे हुए रवा राजपूत अपने–अपने बाल–बच्चों को लेकर सुरक्षा की खोज में इधर–उधर भटकते रहे। भारत में अंग्रेज द्वारा किए गए इन अत्याचारों के कारण लंदनवासी अंग्रेज लेखक और कवि ने लिखा है कि ''यह सत्य है कि ब्रिटिश साम्राज्य पर कभी सूर्यास्त नहीं होता, लेकिन यह भी सत्य है कि उनके साम्राज्य में खून की नदियां कभी नहीं सूखती।''[15]

सन 1857 की क्रांति रवा राजपूतो की आहुति, उनके बलिदान के लिए प्रसिद्ध है। यहीं से रवा राजपूतो के बलिदान का सिलसिला शुरू होता है। अंग्रेज सरकार ने इनके पढ़ने, लिखने, नौकरी करने के सभी अधिकार भी छीन लिए थे, इन्हें अपनी जमीनों से बेदखल कर दिया गया, इन्हें भूखे मरने पर मजबूर कर दिया गया था। परंतु अंग्रेजों का अत्याचार सहकर भी यह रवा राजपूत झुके नहीं। यही कारण रहा कि रवा राजपूत दर–दर भटकते रहे अनेकों रवा राजपूत स्वतंत्रता के युद्ध में बलिदान हुए।

यहां एक तथ्य पर गौर करना और अति आवश्यक हो जाता है कुछ इतिहासकारों ने ठाकुर गंगा बिशन सिंह को गंगा बिशन सिंह पवांर के नाम से संबोधित किया है। अर्थात उन्हें पवांर गोत्रीय बताया है परंतु जानकारी में यह तथ्य सामने आया है कि ठाकुर साहब पवांर गोत्रीय नहीं थे। वह रवा राजपूत थे। उनकी शक्ति को देखकर अंग्रेज अधिकारी उन्हें पावर (शक्ति) के उपनाम से पुकारने लगे थे। इसलिए त्रुटिवश लेखकों ने उन्हें पवांर गोत्र का मान लिया था।[16] अंततः कुछ भी रहा हो, पर फांसी के फंदे को चूमते समय ठाकुर साहब ने ये जरूर सोचा होगा।

''वतन की आबरू का पास देखें कौन करता है,
सुना है आज मकतल में हमारा इम्तहां होगा।
इलाही वह भी दिन होगा सब अपना राज देखेंगे,
जब अपनी जमीन होगी और अपना आसमां होगा।''[17]

इस प्रकार भारत के चमकीले आसमान पर से ठाकुर गंगा बिशन सिंह नाम का एक नक्षत्र आजादी की बलिवेदी पर अपने आप को बलिदान कर गया। वैसे तो सम्पूर्ण गांव टयोढी ठाकुर गंगा बिशन सिंह की वंशज है परन्तु ठाकुर राजेश चौहान पुत्र ठाकुर शिवनारायण सिंह चौहान स्वयं को ठाकुर गंगा बिशन सिंह का वंशज बताते है। हम स्वयं को बहुत ही गौरवान्वित महसूस करते हैं कि हमने उस मिट्टी में जन्म लिया है जिसमें ऐसे ऐसे वीर देशभक्तों ने अपने प्राणों को न्यौछावर कर दिया। नमन है ऐसे वीर बलिदानियों को।

बाबा मेहरचंद

यद्यपि हमें इतिहास अपना प्राप्त पूरा है नहीं,
हम कौन थे यह ज्ञान तो फिर भी अधूरा है नहीं।[18]

1857 की क्रांति के विषय में अनेक इतिहासकारों ने विस्तार से विवरण दिये है परंतु जनपद बागपत के 1857 की क्रांति में दिए गए योगदान और क्रांतिवीरों के विषय में व्यवस्थित रूप से किसी भी लेखक द्वारा लिखने का सार्थक प्रयास नहीं किया गया। फिर भी अपने क्रांतिवीर पूर्वजों के विषय में हमें ज्ञान नहीं है ऐसा भी तो नहीं है लेकिन जनपद बागपत के असंख्य क्रांतिवीर अल्पज्ञात है। जिनमें से बाबा मेहरचंद भी एक हैं। बाबा मेहरचंद का जन्म जनपद बागपत के सिरसली गांव में हुआ था। इनके बाबा का नाम चौधरी दानीचंद था। चौधरी दानीचंद के दो पुत्र चौधरी देशराज और चौधरी हंसराज थे। चौधरी हंसराज को एक पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। जिसका नाम मेहरचंद रखा गया।[19] बालक मेहरचंद प्रारंभ से ही बड़े ही साहसी व स्वच्छंद स्वभाव के थे। गांव सिरसली और बिजरौल गांव में ज्यादा दूरी नहीं है और ऐसा भी माना जाता है कि सिरसली में जिस पट्टी के मेहरचंद थे। उस पट्टी को पूर्व में बिजरौल के किसी बुजुर्ग ने

[14] हिन्दी दैनिक समाचार पत्र अमर उजाला, बागपत, 08 मई 2007। डॉ0 शर्मा महेन्द्र नारायण और डॉ0 राकेश शर्मा, बागपत वातायन, द्वितीय भाग, मंगल प्रकाशन दिल्ली, 2013, पृ0 185।
[15] डॉ0 शर्मा महेन्द्र नारायण और डॉ0 राकेश शर्मा, सन् सत्तावन का क्रान्तिवीर बाबा शाहमल जाट, पूर्वोक्त, पृ0 77।
[16] साक्षात्कार, ठाकुर राजेश चौहान पुत्र श्री शिवनारायण पटवारी, आयु 64 वर्ष, गांव टयोढी, 28 जुलाई 2024।
[17] शर्मा महेश, अमर शहीद भगत सिंह, पूर्वोक्त, पृ0 110।
[18] गुप्त मैथली शरण, भारत–भारती, साहित्य सदन झांसी, 2007, पृ0 14।
[19] भाट की पोथी, मेहरचन्द, सिरसली।

आकर बसाया था। इसलिए सिरसली और बिजरौल के बहुत घनिष्ठ संबंध रहे है। बाबा मेहरचंद सिरसली व बाबा शाहमल लगभग हम उम्र थे तथा दोनों में घनिष्ठ मित्रता थी।[20]

10 मई 1857 को मेरठ से क्रांति का प्रारंभ हुई तथा दिल्ली में मुगल सम्राट बहादुर शाह जफर को क्रांति का नेतृत्व प्रदान कर दिया गया। यह खबर सभी जगह बहुत तेजी से फैल गई थी। इस खबर के मिलते ही ग्रामीण इलाकों में अंग्रेजों के विरुद्ध उत्तेजना का माहौल बन चुका था। बड़ौत और उसके आसपास के 60 गांव के लोग जिनमें सभी धर्मो और सभी जातियां सम्मिलित थी शाहमल की सेना बन गये तथा सभी ने शाहमल को सर्वसम्मति से अपना नेता स्वीकार कर लिया। इस क्रांति के अंतर्गत शाहमल के प्रमुख सहयोगियों में सिरसाली के मेहरचंद एक महत्वपूर्ण स्थान रखते थे। मेहरचन्द ने अपनी किसानो की सेना बनाकर अपने दस्ते को नेतृत्व प्रदान किया था।[21] मेहरचंद द्वारा अपने दस्ते का बड़ी ही कुशलता से नेतृत्व किया गया तथा उन्हें देश की आजादी की खातिर अपना सर्वस्व न्यौछावर करने की प्रेरणा दी। सिरसली में स्थित प्राचीन शिव मंदिर आज भी 1857 की क्रांति की गवाही देता है। बताया जाता है कि क्रांति के समय बाबा शाहमल और बाबा मेहरचंद के नेतृत्व में सिरसली के प्राचीन शिव मंदिर में मीटिंग का आयोजन किया जाता था। यहां मीटिंग करने का कारण यह भी था कि सभी सिरसली के ग्रामीण सहजता से यहां एकत्र हो जाते थे। दूसरा यह कुछ इस प्रकार बना हुआ था कि यहां भरपूर दिन में भी घना अंधेरा रहता था। जिससे किसी की निगाहों में आना बड़ा मुश्किल था।[22] जब 18 जुलाई को बड़का के बेहा नमक जंगल में बाबा शाहमल के नेतृत्व में बागपत के किसान क्रांतिवीर सेनानियों और अंग्रेजों के खाकी रिसाला के मध्य युद्ध हुआ तो बाबा मेहरचंद भी अपने दस्ते के साथ इस युद्ध में शामिल हुए थे। बाबा शाहमल के साथ–साथ इस युद्ध में लगभग 3500 किसान बलिदान हुए।[23]

संभवतः बाबा मेहरचंद ने भी इस युद्ध में वीरगति पायी थी। गांव सिरसली का महत्व इस बात से भी पता लगता है कि जब निर्णायक युद्ध में हजारों की संख्या में किसानों के साथ बाबा शाहमल लड़ते हुए मारे गए और शाहमल के सर को काट लिया गया तथा उसे एक भाले पर टांगा गया[24] तथा अंग्रेज उसे अपने साथ ले गये। तो जो बचे हुए किसान क्रांतिवीर थे उन्हें इससे अपार दुःख का अनुभव हुआ और वह किसी भी कीमत पर अपने नेता का सर वापस प्राप्त करना चाहते थे तथा अंग्रेजों से इसका बदला भी लेना चाहते थे। इसी उद्देश्य के निमित 18 जुलाई 1857 की रात को ही सिरसाली गांव में क्रांति में सम्मिलत गांवों के किसानों की एक आपातकालीन विशाल सभा का आयोजन किया गया। इसमें शाहमल के पोते लज्जामल ने 84 देश के क्रांतिकारियों को एकत्र किया था।[25] इस सभा में सभी गावों से आये किसान क्रान्तिवीर अपने नेता के बलिदान से बहुत क्रोध से भरे हुए थे। सर्वसम्मति से सिरसाली गांव की इस सभा में जिसका आयोजन लज्जमल के नेतृत्व में हुआ उसमें अंग्रेज सेना पर फिर दोबारा आक्रमण करने की योजना बनाई गयी।[26]

इससे पता चलता है की संपूर्ण गांव सिरसाली इस क्रांति में शामिल था तथा अंग्रेजों से लोहा लेने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ रहा था। जनपद बागपत के अनेको गांव अंग्रेजों के विरूद्व लड रहे थे। इसलिए अंग्रेजों द्वारा जनपद बागपत के 28 गांवों को बागी करार दिया गया। जिनमें सिरसली भी शामिल था।[27]

इस क्रांति के असफल हो जाने के पश्चात अंग्रेजों द्वारा सिरसली गांव के किसानों पर बहुत अत्याचार किए गये, उनके घरों को फूंक दिये गये, जमीन छीन ली गयी, उन्हे अनेकों अनेकों प्रकार से प्रताड़ित किया गया। निरपराध किसानों को मारा गया, अंग्रेजों द्वारा बहुत से जुल्म किये गये। आज भी सिरसली वासी बाबा मेहरचंद के साहस और वीरता के किस्से अपने बच्चों को बडे गर्व से सुनते हैं। किसी प्रकार बाबा मेहरचंद का पुत्र मामराज अपनी जान बचाने में कामयाब रहा। मामराज ने बड़ी ही गरीबी में तथा अंग्रेजों से छिपते छिपाते समय निकाला। आज बाबा मेहरचन्द की वंशबेल को महावीर और ओमवीर पुत्र श्री कर्मवीर आगे बढ़ा रहे हैं।[28] नमन है इस बागपत की भूमि को और उसके वीर बलिदानी पुत्रों को। हम अपने उन पूर्वजों के सदैव ही ऋणी रहेंगे।

उन पूर्वजों की कीर्ति का वर्णन अतीव अपार है।
गाते नहीं उनके हम ही गुण गा रहा संसार है।।[29]

देर से ही सही पर जैसे–जैसे 1857 की क्रांति में बागपत के वीरों द्वारा दिया गया योगदान प्रकाश में आ रहा हैं वैसे–वैसे हम ही नहीं बल्कि सारा विश्व उनके बलिदान के सामने नतमस्तक हो रहा है।

---

[20] साक्षात्कार, सेवानिवृत इंजीनियर राजपाल सिंह, पुत्र श्री सुरजमल सिंह, आयु 85 वर्ष, ग्राम सिरसली, 22 अगस्त 2024। अन्य ग्रामीणो से भी पुष्टि की गयी।

[21] डॉ0 रावत राम सिंह, रवा राजपूतों का इतिहास, पूर्वोक्त, पृ0 172।

[22] साक्षात्कार, सेवानिवृत इंजीनियर राजपाल सिंह व अन्य ग्रामवासी पूर्वोक्त।

[23] नेविल एच. आर., डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स ऑफ दि यूनाइटेड प्रोविन्सिज ऑफ आगरा एण्ड अवध, गजेटियर ऑफ मेरठ,1904, पृ0 178।

[24] डनलप वालेस हेनरी रार्बट, सर्विस एण्ड एडवेन्चर विद खाकी रिसाला, रिर्चड बेन्टली, न्यू बुरलिंगटोन स्ट्रीट, लन्दन, 1858, पृ0 106।

[25] पूर्वोक्त, पृ0 108।

[26] डॉ0 शर्मा कृष्ण कान्त, अट्ठारह सौ सत्तावन की क्रांति में बागपत के कृषकों की भूमिका, पूर्वोक्त, पृ0 138।

[27] डॉ0 शर्मा महेन्द्र नारायण और डॉ0 राकेश शर्मा, सन् सत्तावन का क्रान्तिवीर बाबा शाहमल जाट, पूर्वोक्त, पृ0 88।

[28] भाट की पोथी, मेहरचन्द, सिरसली।

[29] गुप्त मैथली शरण, भारत–भारती, पूर्वोक्त, पृ0 15।

चौधरी जयराम

जब हम 1857 में हुई क्रांति की बात करते हैं तो जनपद बागपत का नाम इस क्रांति में योगदान के लिए सर्वाधिक आग्रणी जनपदों में आता है। बागपत के अधिकांश गांवों ने प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से इसमें भाग लिया था। इनमें से अधिकांश गांव के किसानों ने अपने–अपने स्थानीय नेता के नेतृत्व में एकत्र होकर इस क्रांति में बाबा शाहमल का साथ दिया। इनमें जनपद बागपत के एक गांव जौहड़ी का नाम प्रमुख है। जिसके सर्वजन ने जौहड़ी निवासी महान क्रांतिकारी बाबा जयराम के नेतृत्व में अंग्रेजों के दांत खट्टे किए। बाबा जयराम ने अपने दस्ते के साथ बागपत में क्रांति के सर्वमान्य नेता बाबा शाहमल का सहयोग किया था।[30]

गांव जौहड़ी बड़ौत के नजदीक एक बड़ा गांव है। जौहड़ी के विषय में विख्यात है कि पहले इस गांव के चारों तरफ सात बड़े–बड़े झोड़ (तालाब) हुआ करते थे। इन झोड़ (तालाब) के कारण इस गांव का नामांकरण जौहडी पड़ा।[31] चौधरी जयराम का जन्म गांव जौहड़ी में चौधरी अंतराम के यहां हुआ था। इनके जन्म वर्ष के विषय में तो ज्ञात नही होता परन्तु 1857 की क्रान्ति के समय इनकी आयु सम्भवतः 50 वर्ष के आस–पास रही होगी। इनके बाबा का नाम चौधरी नंदराम था।[32] इनका परिवार जौहड़ी का एक संपन्न किसान परिवार था। चौधरी जयराम के परिवार के पास 960 बीघा जमीन के साथ–साथ चार कुए भी थे।[33] इससे इस परिवार की संपन्नता का पता चलता है।

जब अंग्रेजों का शोषण ज्यादा बढ़ गया तो भारतीय सैनिकों और जनता द्वारा 10 मई 1857 को मेरठ से विद्रोह कर दिया गया था। पता चलते ही जनपद बागपत भी बाबा शाहमल के नेतृत्व में क्रांति की जंग में कूद पड़ा। बाबा शाहमल के साथ इस क्रांति में बाबा जयराम भी अपने दस्ते के साथ कंधे से कंधा मिलाकर अंग्रेजों के विरुद्ध लड़े।[34] 1857 की क्रांति में जौहडी गांव के नेतृत्वकर्ता चौधरी जयराम और इस गांव के लोगों ने बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। अंग्रेज इस गांव से, इस गांव के निडर और सहासी लोगों से और इस गांव के किसानों का नेतृत्व कर रहे चौधरी जयराम के नाम से भी कांपते थे। इनका भय अंग्रेजों पर कितना हावी था तथा अंग्रेज चौधरी जयराम से कितना खौफजदा थे इसका पता तात्कालिक मेरठ कलेक्टर विलियम डनलप के लेख से चलता है। जिस समय वह अपनी अंग्रेजी फौज खाकी रिसाला के साथ बड़ौत से क्रांतिकारियों के आक्रमण से घबरा कर रात के अंधेरे में मेरठ के लिए भाग रहा था उसका वर्णन करता हुआ वह अपनी पुस्तक खाकी रिसाला में लिखता है कि ''हम रात के घने अंधेरे में काफी आगे बढ़ गए और जैसे ही क्रांतिकारी गांव जौहड़ी पहुंचे तो हम वहां से बहुत ही चुपचाप गहरी शांति से निकले। हमने वहां से निकलते समय किसी प्रकार की आवाज नहीं होने दी, कि कही क्रांतिकारी गांव जौहड़ी जाग न जाये[35] और यह उस समय की बात है जब खाकी रिसाला बड़का में विजय होकर आया था और वह आधुनिक हथियारों से लैस भी था। इस गांव से जाते समय फिर भी अंग्रेजों में इतनी घबराहट थी तो इससे पता चलता है कि बाबा जयराम के नेतृत्व में गांव जौहड़ी से अंग्रेज कितने भयाक्रांत थे। जयराम अपना सर्वश्व न्यौछावर करके भी भारत को अंग्रेजो से मुक्त कराने के लिए तत्पर थे। परंतु समय को कुछ और ही मंजूर था। पहले 17 जुलाई 1857 को अंग्रेजी सेना खाकी रिसाला द्वारा क्रांतिकारी गांव बसौद पर आक्रमण कर बसौद को जला दिया गया तथा सभी पुरुषों को मार दिया गया। जिनकी संख्या 180 से ऊपर थी।[36] जिससे बागपत के क्रांतिवीरों का खून खौल उठा और उन्होंने अंग्रेजों से प्रतिशोध लेने की प्रतिज्ञा ली तथा आमने–सामने के युद्ध का निर्णय लिया गया। बागपत में क्रांतिकारियों के नेता बाबा शाहमल ने घोषणा की कि ''वह कल पीले चेहरे वाले विदेशी आक्रमणकारियों की पूरी सेना को समाप्त कर देंगे या इस प्रयास में खुद बलिदान हो जाएंगे।''[37] 18 जुलाई 1857 को बड़का के बेहा नामक जंगल में अंग्रेजों से युद्ध करते हुए अपने 3500 साथियों के साथ बाबा शाहमल बलिदान हो गए।[38]

इस युद्ध के पश्चात क्रांतिकारी हतोत्साहित हो गए थे, परंतु उनके दिलों दिमाग में लगी आग ठंडी नहीं हुई थी। जो क्रांतिकारी बच गए थे वह सभी अपने–अपने स्तर से अंग्रेजों को नुकसान पहुंचाने में कोई कोर–कसर नहीं छोड़ रहे थे। बाबा जयराम भी अपने स्तर से अंग्रेजों के विरुद्ध कार्य कर रहे थे। परंतु अब यह सभी क्रांतिकारी नेतृत्वहीन हो गए थे। अंग्रेजों को जौहड़ी के महान क्रांतिकारी और अंग्रेजों की नाक में दम करने वाले बाबा जयराम चौधरी का पता लग चुका था। वह किसी भी तरह चौधरी जयराम को अपने रास्ते से हटाना चाहते थे। इसी उद्देश्य के लिए अंग्रेजों ने संभवतः भेदियों (गुप्तचरो) का सहारा लिया। क्योंकि गद्दारी करने वाले भी कम नहीं थे। ऐसी ही एक जानकारी के आधार पर एक दिन अंग्रेजों ने जौहड़ी गांव को चारो ओर से घेर लिया। उस समय जयराम अपनी हवेली में ही मौजूद थे। जयराम ने बचने की कोशिश की परन्तु अंग्रेजों से बच निकलने का कोई मार्ग नहीं था। अंततः चौधरी जयराम को उनकी हवेली से अंग्रेजों द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया। गिरफ्तार करने के बाद अपनी क्रूरता का प्रदर्शन करते हुए गांव जौहड़ी के लोगों को

---

[30] डॉ0 शर्मा महेन्द्र नारायण और डॉ0 राकेश शर्मा, सन् सत्तावन का क्रान्तिवीर बाबा शाहमल जाट, पूर्वोक्त, पृ0 82।

[31] साक्षात्कार, धीरज पुत्र श्री लाल सिंह, आयु 48 वर्ष, ग्राम जौहडी, 22 अगस्त 2024। अन्य ग्रामीणो से भी पुष्टि की गयी।

[32] भाट की पोथी, जयराम, जौहडी।

[33] साक्षात्कार, धीरज पुत्र श्री लाल सिंह, पूर्वोक्त।

[34] डॉ0 शर्मा महेन्द्र नारायण और डॉ0 राकेश शर्मा, बागपत वातायन, प्रथम भाग, पूर्वोक्त, पृ0 99।

[35] डनलप वालेस हेनरी रार्बट, पूर्वोक्त, पृ0 109।

[36] स्टोक्स ऐरिक, द पीसेन्ट आर्मड द इण्डियन रिवोल्ट ऑफ 1857, कलारेन्डोन प्रेस, आक्सफोर्ड, 1986, पृ0 162।

[37] डनलप वालेस हेनरी रार्बट, पूर्वोक्त, पृ0 95।

[38] नेविल एच. आर, मेरठ गजेटियर, 1904, पूर्वोक्त, पृ0 178।

खौफजदा करने के उद्देश्य से महान देशभक्त क्रांतिकारी चौधरी जयराम को उसकी हवेली के सामने ही गांव की चौपाल पर सरेआम फांसी पर लटका दिया गया।[39]

परन्तु यह भी निश्चित है फांसी के समय बाबा जयराम के चेहरे पर डर का कोई भी भाव परिलक्षित नही हुआ होगा। उन्हाने बलिदान होते समय अंग्रेजो को ललकार कर कहा होगा हम तो चलते है पर हमारी आने वाली नस्ले तुम्हे एक दिन भारत से जरूर जाने पर विवश कर देंगी। इसके पश्चात चौधरी जयराम ने हसंते–हसंते फांसी का फंदा चूम लिया होगा।

उनके बलिदान के पश्चात जैसा आमतौर पर अंग्रेज करते थे वैसा ही जौहड़ी गांव के साथ भी किया गया। ग्रामीणों को अनेको प्रकार से प्रताड़ित किया गया, पूरे गांव को बागी घोषित कर दिया गया। चौधरी जयराम की सारी जमीन छीन ली गयी, उनकी हवेली को जमीनदोज कर दिया गया। चौधरी जयराम के परिवार वाले घर से बेघर हो गये तथा बड़ी ही कठिनता से अपना जीवन बचाने और जीवन यापन करने में सफल रहे। आज गांव में उस स्थान पर जहां यह वीर बलिदान हुए थे उनकी स्मृति में स्मृति स्थल का निर्माण कराया गया है तथा वहां एक शिलालेख भी लगवाया गया है। समय–समय पर इस स्मृति स्थल पर देशभक्ति के कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। बाबा जयराम के एक पुत्री और तीन पुत्र थे पुत्री का नाम रामकला तथा पुत्रों का नाम क्रमश रामलाल, मीरसिंह और शीशराम थे आज इनके वंशबेल को छठी पीढ़ी में उनके पडपोत्र अजय प्रधान और धीरज कुमार पुत्र श्री लाल सिंह आगे बढ़ा रहे हैं।[40] आज भी गांव जौहड़ी के ग्रामीण बाबा जयराम की बहादुर के किस्से बड़े गर्व से सुनते हैं तथा उनके प्रति अपने कृतज्ञता प्रदर्शित करते हैं। नमन है ऐसे महान क्रांतिवीरों को।

निष्कर्ष:

1857 की क्रांति अथवा भारत वर्ष का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम भारतीय इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक है जिसने सम्पूर्ण भारत सहित पश्चिमी उत्तर प्रदेश के वर्तमान जनपद बागपत को विशेष प्रभावित किया और लोगो में ये विश्वास उत्पन्न किया कि अंग्रेजो से भारत को आजाद कराया जा सकता है वह अजय नही है। वैसे तो इस क्रांति में भारतवर्ष के लाखो देशभक्तो ने अपने प्राणो का उत्सर्ग किया परन्तु कुछ प्रमुख व्यक्तियों ने नामो को छोडकर अनगिनत देशभक्त अज्ञात ही है। इससे जनपद बागपत भी अछुता नही रहा है। इसका कारण भी है कि क्रांति विफल होने के पश्चात अंग्रेजो द्वारा गांव के गांव जला दिये गये ज्यादातर लोगो को मार दिया गया और जो लोग किसी प्रकार बच गये वो दर–दर भटकने को मजबूर हो गये थे तथा किसी प्रकार जीवित रह सके उनके द्वारा अपने लोगो के विषय में कुछ भी लिख पाना सम्भव नही था और दुखद पहलु ये भी है कि भारत के आजाद होने के पश्चात भी इस ओर ध्यान नही दिया गया।

वर्तमान जनपद बागपत में भी हजारो की संख्या में लोगो ने अंग्रेज सरकार के विरुद्व एकजुट होकर आजादी की लडाई लडी परन्तु यहा भी कुछ नामो को छोडकर बहुत से देशभक्तो के नाम अज्ञात अथवा अल्पज्ञात ही है। उनमें बागपत में क्रांति के नेतृत्वकर्ता बाबा शाहमल का साथ देने वाले और अंग्रेजो को बागपत से खदेड कर जनता की सरकार स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले बागपत के क्रांतिकारीयो द्वारा नियुक्त तात्कालिक तहसीलदार ठाकुर गंगाबिशन सिंह, जिनके नाम और गांव से भी अंग्रेज कांपते थे जो उस समय के एक बडे जमींदार भी थे एंव देश की आजादी के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाले चौधरी जयराम सिंह, सिरसली निवासी मेहरचन्द जिन्होने बाबा शाहमल का साथ देते हुए रणक्षेत्र में ही वीरगति प्राप्त की, ऐसे ही अनगिनत वीर देशभक्त अज्ञात के अन्धकार में लगभग लुप्त प्राय हो चुके है। आज आवश्यकता है कि समाज को इन देशभक्तो के त्याग और बलिदान से रूबरू कराया जाये और इन्हे उचित सम्मान दिलाया जाये जिसके ये अधिकारी है। अगर हम ऐसा नही कर पाते तो इतिहास हमें कभी माफ नही करेगा और हम कृतघ्न कहलायेंगे।

सन्दर्भ सूची

1 शर्मा महेश, अमर शहीद भगत सिंह, प्रकाशक प्रभात पेपरबैक्स, नई दिल्ली, 2015, पृ0 8।
2 डॉ0 शर्मा कृष्ण कान्त, अट्ठारह सौ सत्तावन की क्रांति में बागपत के कृषकों की भूमिका, शहजाद राय शोध संस्थान, बडौत, पृ0 141।
3 साक्षात्कार, ठाकुर राजेश चौहान पुत्र श्री शिवनारायण पटवारी, आयु 64 वर्ष, गांव ट्योढी, 28 जुलाई 2024।
4 पूर्वोक्त।
5 डॉ0 शर्मा महेन्द्र नारायण और डॉ0 राकेश शर्मा, बागपत वातायन, प्रथम भाग, आस्था साहित्य संस्थान, अलवर राजस्थान, 2010, पृ0 99।
6 हिन्दी दैनिक समाचार पत्र दैनिक जागरण, बागपत, 09 मई 2023।
7 डॉ0 रावत राम सिंह, रवा राजपूतों का इतिहास, प्रथम खण्ड, विद्या उपकारिणी रवा राजपूत सभा (पंजीकृत) डब्ल्यू. जेड. 485, नरायणा, नई दिल्ली – 110028, 1991, पृ0 173।

[39] हिन्दी दैनिक समाचार पत्र अमर उजाला बागपत, 17 मई 2013।
[40] भाट की पोथी, जयराम, जौहडी।

8 हिन्दी दैनिक समाचार पत्र दैनिक जागरण, बागपत, 10 मई 2011।
9 डॉ0 शर्मा महेन्द्र नारायण और डॉ0 राकेश शर्मा, सन् सत्तावन का क्रान्तिवीर बाबा शाहमल जाट, पब्लिसर दि जनरल ऑफ दि मेरठ युनिवर्सिटी हिस्ट्री एलुमिनी, मेरठ, पृ0 76।
10 हिन्दी दैनिक समाचार पत्र हिन्दूस्तान, बागपत, 10 मई 2011।
11 डॉ0 शर्मा कृष्ण कान्त, अट्ठारह सौ सत्तावन की क्रांति में बागपत के कृषकों की भूमिका, पूर्वोक्त, पृ0 140।
12 पूर्वोक्त, पृ0 130।
13 डॉ0 रावत राम सिंह, रवा राजपूतों का इतिहास, पूर्वोक्त, पृ0 173।
14 हिन्दी दैनिक समाचार पत्र अमर उजाला, बागपत, 08 मई 2007। डॉ0 शर्मा महेन्द्र नारायण और डॉ0 राकेश शर्मा, बागपत वातायन, द्वितीय भाग, मंगल प्रकाशन दिल्ली, 2013, पृ0 185।
15 डॉ0 शर्मा महेन्द्र नारायण और डॉ0 राकेश शर्मा, सन् सत्तावन का क्रान्तिवीर बाबा शाहमल जाट, पूर्वोक्त, पृ0 77।
16 साक्षात्कार, ठाकुर राजेश चौहान पुत्र श्री शिवनारायण पटवारी, आयु 64 वर्ष, गांव ट्योढी, 28 जुलाई 2024।
17 शर्मा महेश, अमर शहीद भगत सिंह, पूर्वोक्त, पृ0 110।
18 गुप्त मैथली शरण, भारत–भारती, साहित्य सदन झांसी, 2007, पृ0 14।
19 भाट की पोथी।
20 साक्षात्कार, सेवानिवृत इंजीनियर राजपाल सिंह, पुत्र श्री सुरजमल सिंह, आयु 85 वर्ष, ग्राम सिरसली, 22 अगस्त 2024। अन्य ग्रामीणो से भी पुष्टि की गयी।
21 डॉ0 रावत राम सिंह, रवा राजपूतों का इतिहास, पूर्वोक्त, पृ0 172।
22 साक्षात्कार, सेवानिवृत इंजीनियर राजपाल सिंह व अन्य ग्रामवासी पूर्वोक्त।
23 नेविल एच. आर., डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स ऑफ दि यूनाइटेड प्रोविन्सिज ऑफ आगरा एण्ड अवध, गजेटियर ऑफ मेरठ,1904, पृ0 178।
24 डनलप वालेस हेनरी रार्बट, सर्विस एण्ड एडवेन्चर विद खाकी रिसाला, रिर्चड बेन्टली, न्यू बुरलिंगटोन स्ट्रीट, लन्दन, 1858, पृ0 106।
25 पूर्वोक्त, पृ0 108।
26 डॉ0 शर्मा कृष्ण कान्त, अट्ठारह सौ सत्तावन की क्रांति में बागपत के कृषकों की भूमिका, पूर्वोक्त, पृ0 138।
27 डॉ0 शर्मा महेन्द्र नारायण और डॉ0 राकेश शर्मा, सन् सत्तावन का क्रान्तिवीर बाबा शाहमल जाट, पूर्वोक्त, पृ0 88।
28 भाट की पोथी।
29 गुप्त मैथली शरण, भारत–भारती, पूर्वोक्त, पृ0 15।
30 डॉ0 शर्मा महेन्द्र नारायण और डॉ0 राकेश शर्मा, सन् सत्तावन का क्रान्तिवीर बाबा शाहमल जाट, पूर्वोक्त, पृ0 82।
31 साक्षात्कार, धीरज पुत्र श्री लाल सिंह, आयु 48 वर्ष, ग्राम जौहडी, 22 अगस्त 2024। अन्य ग्रामीणो से भी पुष्टि की गयी।
32 भाट की पोथी, जयराम, जौहडी।
33 साक्षात्कार, धीरज पुत्र श्री लाल सिंह, पूर्वोक्त।
34 डॉ0 शर्मा महेन्द्र नारायण और डॉ0 राकेश शर्मा, बागपत वातायन, प्रथम भाग, पूर्वोक्त, पृ0 99।
35 डनलप वालेस हेनरी रार्बट, पूर्वोक्त, पृ0 109।
36 स्टोक्स ऐरिक, द पीसेन्ट आर्मड द इण्डियन रिवोल्ट ऑफ 1857, कलारेन्डोन प्रेस, आक्सफोर्ड, 1986, पृ0 162।
37 डनलप वालेस हेनरी रार्बट, पूर्वोक्त, पृ0 95।
38 नेविल एच. आर, मेरठ गजेटियर, 1904, पूर्वोक्त, पृ0 178।
39 हिन्दी दैनिक समाचार पत्र अमर उजाला बागपत, 17 मई 2013।
40 भाट की पोथी, जयराम, जौहडी।